में आरूढ़ हुए। जो इस ब्रह्म का उल्लंघन नहीं कर सकता, उसके पतन का भय बना रहता है। श्रीमद्भागवत में कथन है कि निर्विशेष ब्रह्म तक पहुँचा मनुष्य यदि आगे न बढ़े तो भगवत्-ज्ञान के अभाव में उसकी बुद्धि पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं हो पाती। अतएव ब्रह्मस्तर पर आरूढ़ हो जाने के बाद भी भगवद्भक्ति के अभाव में अधःपतन की पूरी सम्भावना है। वैदिक शास्त्रों में आया है, **रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।** ''भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् रसराज हैं। जो उन्हें जानता है, वह भी चिन्मय रसानन्द का आस्वादन करता है।'' परमेश्वर छहों ऐश्वर्यों में पूर्ण हैं। इसलिए जब भक्त उनके उन्मुख होता है, तो इन सबका आदान-प्रदान हुआ करता है। राजा का सेवक प्रायः स्वामी की बराबरी प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार, शाश्वत् अमृतमय सुख तथा अविनाशी जीवन भक्तियोग के सहचर हैं। ब्रह्मानुभूति अथवा नित्यता अथवा अमृतत्व भक्तियोग में समाए रहते हैं। अतएव भक्तियोगी को यह सब पहले से ही प्राप्त है।

स्वरूप से ब्रह्मतत्त्व होने पर भी जीवात्मा प्राकृत-जगत् पर प्रभुत्व करना चाहता है और इसी कारण गिरता है। उसका स्वरूप माया के तीनों गुणों से परे है; फिर भी प्रकृति के संग से वह सत्त्व, रज और तम—प्रकृति के इन नाना गुणों में बँध जाता है। गुणों के संग में प्राकृत-जगत् पर प्रभुत्व की उसकी कामना बनी रहती है। परन्तु पूर्ण कृष्णभावना के साथ भक्तियोग में संलग्न होते ही वह तुरन्त गुणातीत हो जाता है और माया पर प्रभुत्व करने की उसकी अवैध इच्छा दूर हो जाती है। अतएव भक्तियोग की सिद्धि के लिए भक्तों के सत्संग में श्रवण, कीर्तन, स्मरण आदि नवधा साधन भक्ति का अभ्यास करना चाहिए। इस प्रकार के सत्संग और गुरुकृपा के प्रताप से क्रमशः प्रभुत्व-प्राप्ति की प्राकृत कामना के क्षीण होने पर वह अचल भाव से भगवद्भक्तिनिष्ठ हो जाता है। बाइसवें श्लोक से इस अन्तिम श्लोक तक इसी पद्धति का विधान है। भगवद्भक्ति की पद्धति अतिशय सरल और सुगम है। नित्य भगवत्सेवा करे, श्रीविग्रह को निवेदित नैवेद्य-प्रसाद का आहार करे, भगवच्चरणारविन्द में अर्पित पुष्पों की सुगन्ध को सूंघे, श्रीभगवान् के पावन लीलाधामों का दर्शन करे, भक्तों से उनकी प्रेममयी क्रीड़ाओं का श्रवण करे, **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** महामन्त्र का नित्य-निरन्तर कीर्तन करे तथा भगवान् और भक्तों की आविर्भाव-तिरोधान जयन्तियों पर उपवास करे। इस पद्धति का अनुसरण करने पर सम्पूर्ण जड़ कर्मों से पूर्ण विरक्ति हो जाती है। जो इस प्रकार ब्रह्मज्योति में स्थित हो जाता है, वह चिद्गुणों में श्रीभगवान् के समान है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः।।१४।।

इति भक्तिवेदान्तभाष्ये चतुर्दशोऽध्यायः।।